निबन्ध

भारतीय समाज में नारी का स्थान

रूपरेखा :-

- प्रस्तावना
- नारी का अतीत
- मध्यकालीन नारी
- आधुनिक नारी
- पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव
- उपसंहार ।

प्रस्तावना :-

स्त्री और पुरुष गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। इन दोनों के सहयोग से ही गृहस्थ जीवन सफल होता है। स्त्री पुरुष की सहधर्मिणी तो है ही, वह मित्र के समान परामर्शदात्री, सहायिका, माता, सेवा करने वाली सेविका भी है।

मनु ने कहा है—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,
रमन्ते तत्र देवता।"

नारी का अतीत :-

आदिकाल में नारी को स्वतंत्रता एवं सम्मान की कमी नहीं थी, पुरुष के समान स्त्रियाँ भी विद्यार्जन, शास्त्रार्थ, युद्ध कौशल, राजनीति आदि में निपुण थीं। गार्गी, अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, मैत्रेयी, रत्नावली विश्ववारा, आदि इसकी उदाहरण हैं।

मध्यकालीन नारी :—

नारी की स्थिति मध्यकाल में दयनीय एवं शोचनीय हो गयी। मुगल सल्तनत की स्थापना से हिन्दू समाज का ढाँचा चरमरा गया। हिन्दू समाज गुलाम बनकर मुगलों का अनुकरण करने लगा नारी को केवल वासना-तृप्ति एवं भोग का साधन माना जाने लगा। शिक्षा शून्य हो गयी, बाल विवाह प्रारम्भ हुआ, सती प्रथा, आदि अनेक कुप्रथाओं ने जन्म ले लिया।

मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा—

"अबला जीवन हाय तुम्हारी
यही कहानी।
आँचल में है दूध और
आँखो में पानी॥"

आधुनिक नारी :—

आधुनिक युग में अंग्रेजो के सम्पर्क से अनेक समाज-सुधार आंदोलन हुए जिसमें सती प्रथा पर रोक लगायी गयी विधवा पुनर्विवाह को मान्यता मिली बाल-विवाह पर रोक लगाई गयी। पन्त जी की निम्न पंक्तियों के माध्यम से आक्रोश प्रकट किया गया है—

"मुक्त करो नारी को मानव
चिर बंदिनी नारी को॥"

आज की नारी पुरुषों के समान ही अधिकार पाने वाली और कन्धे से कन्धा मिला के हर क्षेत्र में अवसर प्राप्त कर रही है।

पाश्चात्य संस्कृति के नारी पर प्रभाव :—

वर्तमान में नारियाँ पाश्चात्य देशों का अनुकरण कर रही हैं। पाश्चिमी भौतिकवादी प्रवृत्ति चिंता-जनक है। नारियाँ भोगवादी प्रवृत्ति की तरफ बढ़ रही हैं। फैशन और आडम्बर में जीवन के मूल्यों को भूली जा रही हैं।

पंत जी चैतावनी में लिखते हैं—

"तुम सब कुछ हो फूल,
लहर तितली, मार्जारी,
आधुनिके! कुछ नहीं अगर हो,
तो केवल तुम नारी॥"

पाश्चिमी संस्कार इतने हावी हो रहे हैं कि नारी स्वयं को उसी रंगीनियों में डुबा रही है, वह चाहती है कि मैं एक रंग बिरंगी तितली बन जाऊँ और लोग, पुरुष मुझ पर न्योछावर एवं आकृष्ट हों।

उपसंहार :—

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नारी मध्यकाल में जितनी ज्यादा परतंत्र थी उतनी ही आज स्वतंत्र है।

प्रसाद जी ने लिखा—

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष-स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में॥"